

चित्रपट संगीत में ध्रुपद एवं खयाल गायन शैलियों का प्रयोग: एक अवलोकनात्मक अध्ययन

डॉ. रीमा शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर
खालसा कॉलेज फॉर वीमेन, सिविल लाइन्स,
लुधियाना, पंजाब
Email: kcw.reema@yahoo.com

सारांश

भारतीय संगीत अपने प्रत्येक रूप में सदैव आनन्ददायक रहा है। इसमें ध्रुपद, खयाल, ठुमरी, गज़ल, गीत इत्यादि विविध प्रकार की गायन विधाएं प्रचलित हैं। इन गायन शैलियों को शास्त्रीय संगीत, उपशास्त्रीय संगीत, लोक संगीत एवं सुगम संगीत इत्यादि के अन्तर्गत वर्गीकृत किया गया है। ये विधाएँ दीर्घकाल से ही जनमानस को आनन्दित एवं रंजित करने में सक्षम रही हैं। वर्तमान समय में संगीत की एक और विधा अत्यन्त प्रचलित एवं जनप्रिय हो चुकी है वह है चित्रपट संगीत। वास्तव में चित्रपट संगीत का आधार हमारा हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत ही है। चित्रपट संगीत के प्रारम्भिक काल में अधिकांश गीत शास्त्रीय संगीत के आधार पर रचित पाए गए हैं। तानसेन, बसंत बहार, गूँज उठी शहनाई, बैजू बावरा, माधुरी, संगीत सम्राट तानसेन, राग रंग, झनक-झनक पायल बाजे, रानी रूपमती, मुगले-आज़म, बावर्ची, लेकिन, सुर-संगम, ममता, आलाप इत्यादि चित्रपट शास्त्रीय संगीत से सुसज्जित हैं। जहाँ एक ओर शास्त्रीय संगीत के रागों एवं तालों का प्रयोग इन गीतों में स्वतन्त्र रूप से किया गया वहीं शास्त्रीय संगीत की समस्त विधाओं ध्रुपद, खयाल, तराना, रागमाला इत्यादि ने भी चित्रपट गीतों को अलंकृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कई चित्रपट गीतों का निर्माण इन गायन शैलियों के आधार पर हुआ तो वहीं इन विधाओं की घरानेदार परम्परागत एवं प्रसिद्ध बंदिशों का सुन्दर प्रयोग भी चित्रपट संगीतकारों द्वारा सफलतापूर्वक किया गया और वर्तमान समय में भी किया जा रहा है। चित्रपट संगीत में शास्त्रीय गायन विधाओं के प्रयोग ने संगीत जिज्ञासुओं के साथ-साथ साधारण संगीत रसिकों को भी आनन्द विभोर किया है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य चित्रपट संगीत में शास्त्रीय संगीत की ध्रुपद एवं खयाल गायन शैली के प्रयोग का अध्ययन करना है।



मुख्य शब्द: खयाल, ध्रुपद, चित्रपट संगीत, शास्त्रीय संगीत, गायन शैली

How to cite this article:

Sharma, Reema. 2023. "Chitrapat Sangeet me Dhrupad Evam Khyal Gayan Shailiyon ka Prayog: Ek Avlokmatmak Addhyayan." *Sangeet Galaxy* 12(2): 135-144. www.sangeetgalaxy.co.in.

भूमिका:

संगीत का उद्देश्य मानव मन को मधुर स्वर लहरियों में लीन कर अपूर्व आनन्द की अनुभूति कराना है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए भारतीय संगीत में चिरकाल से ही विविध गायन शैलियों का उद्भव, विकास एवं प्रचलन होता रहा है। विद्वानों के अनुसार संगीत प्राणीमात्र की तथा सम्पूर्ण सृष्टि की भाषा है। परन्तु प्रत्येक मानव समाज में सदैव एक ही प्रकार का संगीत प्रचलित नहीं रहता। समय की परिवर्तित होती परिस्थितियों एवं जनरुचि के अनुकूल, उसमें परिवर्तन आना स्वाभाविक है।¹ इस प्रकार से उसके विविध प्रकारों का निर्माण एवं प्रचार होता रहता है। यही कारण है कि भारतीय संगीत भी लोक संगीत, शास्त्रीय संगीत, उपशास्त्रीय एवं सुगम संगीत रूपी विभिन्न धाराओं में प्रवाहित होता रहा है। जब भारत में चित्रपट का आगमन हुआ तो इसमें प्राण संचारण हेतु संगीत का सहारा लिया गया जो धीरे-धीरे जनप्रिय होने लगा। सिनेमा में काम आने वाला संगीत जो अन्य प्रकार की संगीत शैलियों से भिन्न था, सिने संगीत कहलाने लगा। इस प्रकार से चित्रपट संगीत ने धीरे-धीरे अपना अस्तित्व स्थापित किया। वर्तमान समय में यह एक पृथक् संगीत विधा के रूप में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना चुका है। चित्रपट संगीत अथवा सिने संगीत या फिल्म संगीत की बढ़ती लोकप्रियता को वर्तमान समय में सर्वत्र देखा जा सकता है। प्रारम्भ से ही चित्रपट को लोकप्रिय एवं सफल बनाने में संगीत की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। संगीत की ऐसी कोई विधा नहीं जिसका परिष्कृत और मधुरतम रूप फिल्म संगीत में प्रयुक्त न हुआ हो। अनेक संगीत प्रधान फिल्मों ने भारतीय संगीत जगत पर अपना अमिट प्रभाव छोड़ा है।²

चित्रपट संगीत में सभी विधाओं के दर्शन होते हैं। इसका उद्देश्य मानव मन के गहनतम भावों की सुन्दर एवं सफल अभिव्यक्ति सरल धुनों द्वारा करना है। साथ ही साधारण संगीत रसिकों का मनोरंजन करना भी उसका प्रथम उद्देश्य है। फिल्म संगीत अपने श्रोताओं के मनोरंजन हेतु शास्त्रीय एवं लोकसंगीत की विविध गायन विधाओं का आश्रय लेता रहा है। परिवर्तित समय के साथ परिवर्तित होती जनरुचि को पहचान कर तीन से चार मिनट की अवधि में कर्णप्रिय संगीत का निर्माण करना, शब्दों एवं काव्य की भावना को समझते हुए स्वरों का प्रयोग कर सुन्दर धुन रचना तैयार करना इसकी महत्वपूर्ण विशेषता है।³

सवाक् फिल्मों के निर्माण एवं प्रचलन से पूर्व भारत में लोक संगीत एवं शास्त्रीय संगीत ही प्रचलित था। सिनेमाघर में मूक फिल्म के प्रदर्शन से पूर्व फिल्म की पटकथा जानकर संगीत मण्डली विभिन्न दृश्यों के हाव-भाव का प्रदर्शन शास्त्रीय संगीत की विविध गायन विधाओं के द्वारा से किया करती थी। इस प्रकार से भारतीय फिल्मों में शास्त्रीय संगीत की विधाओं का आगमन मूक चित्रपट के समय से ही हो गया माना जा सकता है।

चित्रपट संगीत के विकासक्रम का अध्ययन करने से यह दृष्टिगत होता है कि 30 के दशक से सवाक् फिल्मों में शास्त्रीय संगीत की विविध गायन शैलियों का प्रयोग होना प्रारम्भ हो गया था। चित्रपट संगीत में शास्त्रीय संगीत की गायन विधाओं के प्रयोग का एक कारण यह भी रहा कि उस समय के अधिकांश संगीतकार किसी न किसी घराने से थे। इसलिए उनके द्वारा निर्मित संगीत में उनके घराने की बंदिशों अथवा गायकी के दर्शन सहज एवं स्वाभाविक रूप से होते हैं। शास्त्रीय संगीत अर्थात् हिन्दुस्तानी संगीत की समस्त गायन विधाओं को चित्रपट संगीत ने खुले दिल से अपनाया है और

साथ ही यह कहना भी अनुचित न होगा कि ये विधाएं चित्रपट संगीत को सुसज्जित कर इसका अभिन्न अंग बन गईं. वैसे तो इन सभी विधाओं में अगणित गीतों की रचना हुई. इनमें शास्त्रीय गायन शैलियों में ध्रुपद, ख्याल, तराना, रागमाला इत्यादि का प्रयोग सफलतापूर्वक किया गया. यद्यपि अधिकांश गीत ख्याल शैली के ही रचे गये परन्तु कुछ गीत अन्य शैलियों में भी जनसाधारण के समक्ष प्रस्तुत करने में फिल्म संगीतकार सफल रहे हैं.

चित्रपट संगीतकारों को फिल्म में जहां कहीं भी, जब भी उपयुक्त परिस्थिति या कथावस्तु मिली तो शास्त्रीय संगीत पर आधारित गीत-संगीत या बिल्कुल विशुद्ध रूप में शास्त्रीय संगीत की गायन शैलियों एवं उनकी बंदिशों का प्रयोग करने से नहीं चूके. वास्तव में शास्त्रीय संगीत अत्यन्त मर्यादित एवं नियमों में पूर्णतः बाधित होकर एक निश्चित परम्परा के अनुसार प्रस्तुत किया जाने वाला संगीत है. भले ही यह संगीत साधारण संगीत प्रेमियों के लिए नहीं हो सकता. परन्तु फिल्मी संगीतकारों ने इस संगीत को कम से कम समय में अत्यधिक सुन्दरता से प्रस्तुत किया. इनमें रचित गीतों को संगीत रसिकों से ही नहीं, जनसाधारण से भी स्नेह प्राप्त हुआ है.

ध्रुपद गायन शैली का चित्रपट में प्रयोग:

भारतीय चित्रपट में ख्याल, ठुमरी, दादरा गायन का प्रयोग तो प्रचुर मात्रा में किया गया दिखाई देता है, परन्तु ध्रुपद गायन विधा का प्रयोग कुछ एक चित्रपट में किया गया मिलता है. ध्रुपद गायन विधा का मध्यकाल में काफी प्रचलन था. इसलिए मध्यकाल के इतिहास को दर्शाते चित्रपट में ध्रुपद गायन की झलक दर्शाने का प्रयास चित्रपट के कुछ संगीतकारों ने किया है. हालांकि चित्रपट में ध्रुपद गायन को पूर्णतः परम्परागत ढंग से प्रस्तुत नहीं किया गया है क्योंकि तीन घंटों की फिल्म में प्रायः गीत चार-पांच मिनट का ही होता है और ध्रुपद का तो आरम्भिक आलाप ही एक घंटे के आस-पास चला जाता है तो इसलिए फिल्म में इसका पूर्णतः प्रस्तुतिकरण सम्भव नहीं है. इस बात को ध्यान में रखकर एवं दर्शकों के मनोरंजन को भी प्राथमिकता देते हुए चित्रपट के गीतों का निर्माण इस गायन के आधार एवं प्रभावाधीन किया गया. क्योंकि चित्रपट की विषयवस्तु में वास्तविकता लाने हेतु ही इस प्रकार से संगीत रचना करना संगीतकारों का उद्देश्य होता है. 'तानसेन' एवं 'संगीत सम्राट तानसेन' इन दो चित्रपट के गीतों में ध्रुपद गायन शैली का स्वतन्त्र प्रयोग दिखाई देता है.

भारत के संगीत सम्राट तानसेन के जीवन की कुछ सत्य घटनाओं पर 1943 में एक फिल्म बनाई गई और उसका नाम भी 'तानसेन' ही रखा गया. इसके निर्देशक जयन्त देसाई और संगीतकार खेमचंद प्रकाश थे. संगीतकार खेमचंद प्रकाश ने तानसेन के समय के इतिहास को ध्यान में रखते हुए सभी गीतों की रचना शास्त्रीय संगीत की ध्रुपद गायन शैली के आधार पर की, चूंकि तानसेन के काल में ध्रुपद गायन प्रचलित था और तानसेन स्वयं ध्रुपद के एक महान गायक थे. राज दरबारों में ध्रुपद गायन को प्रचलित करने का श्रेय तानसेन को ही जाता है. इसी कारण संगीतकार ने चित्रपट तानसेन (1943) के गीतों की रचना ध्रुपद गायन के रूप में की. इस फिल्म में तानसेन की भूमिका निभाने के लिए उस दौर के महान गायक एवं अभिनेता के.एल. सहगल को चुना गया. इस चित्रपट में संगीतकार ने राग यमन एवं ताल चैताल में 'सप्त सुरन तीन ग्राम' ध्रुपद समरूपी गीत की रचना कर इसे के.एल. सहगल से गवाया.⁴ इस ध्रुपद का गायन महाराज

अकबर के दरबार में तानसेन द्वारा करते हुए, इस चित्रपट में सफलतापूर्वक दर्शाया गया. पखावज पर चौताल एवं लयकारियों के सुंदर प्रयोग ने इसे और भी सुंदर बनाया. बंदिश के बोल भी बेहद सुंदर लिखे गये. इसी फिल्म में 'रुमझुम चाल तिहारी' गीत भी ध्रुपद अंग की रचना है जिसे राग शंकरा में स्वरबद्ध किया गया.⁵ इसका गायन भी के.एल. सहगल द्वारा ही किया गया. इसके अतिरिक्त 'दीया जलाओ जगमग' भी राग यमन में रचित गीत का गायन के.एल. सहगल ने ध्रुपद अंग से किया.⁶ इस गीत का प्रयोग भी राजदरबार में तानसेन के जीवन की वास्तविक घटना का दृश्य फिल्माने हेतु किया गया. इसी चित्रपट में नायिका की भूमिका में अभिनेत्री एवं पार्श्व गायिका खुशीद बानो द्वारा गाया राग मेघ मल्हार में रचित 'बरसो रे काले बदरवा' भी ध्रुपद शैली का गीत है.⁷

1962 में तानसेन की सांगीतिक यात्रा एवं जीवन पर आधारित एक और फिल्म का निर्माण किया गया. जिसका शीर्षक 'संगीत सम्राट तानसेन' रखा गया. इस चित्रपट में भी गीतों की रचना ध्रुपद गायन शैली में की गई. हालांकि इस चित्रपट में ख्याल शैली का प्रयोग भी दिखाई देता है, जो कि उचित प्रतीत नहीं होता. क्योंकि तानसेन के समय में ध्रुपद गायन ही प्रचलन में था. मन्दिरों एवं राज दरबारों में ध्रुपद गायन शैली का गायन किया जाता था. इस चित्रपट में 'सुध बिसर गई आज अपने गुनन की'⁸ राग हेमन्त में 'सप्त सुरन तीन गान'⁹ राग भूपाली में, 'दीपक जलाओ' राग दीपक में तथा विभिन्न रागों का लक्षण बताते हुए रागमाला का गायन ध्रुपद शैली में किया.¹⁰ इन गीतों में पखावज पर सूलताल एवं झपताल के खुले बोलों का प्रयोग किया गया है.

ख्याल गायन शैली का चित्रपट संगीत में प्रयोग

शास्त्रीय संगीत में ख्याल गायन शैली को सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त है, साधारणतः शास्त्रीय संगीत से अभिप्राय ख्याल शैली से ही लिया जाता है. भारतीय शास्त्रीय संगीत में जिस प्रकार इस विधा का विशेष स्थान है, उसी प्रकार फिल्म संगीत में भी इस गायन शैली का प्रयोग अन्य शैलियों की अपेक्षा अधिक रहा है. अतः चित्रपट संगीत में इसका दबदबा आज भी बना हुआ है.

ख्याल शैली के गीतों का चित्रपट संगीत में अत्यन्त प्रचलन रहा है. इनमें कुछ गीत तो ख्याल अंग से रचे गये हैं और कहीं-कहीं ख्याल की परम्परागत बंदिशों का भी प्रयोग हुआ है. इनकी सूची बहुत लम्बी है. शोध पत्र की सीमा को ध्यान में रखते हुए इनका वर्णन संक्षिप्त रूप में करने का प्रयास किया गया है.

1932 में बनी इम्पीरियल फिल्म कम्पनी की 'माधुरी' पहली फिल्म थी जिसके ग्रामोफोन रिकार्ड जारी हुए. प्राणसुख नायक के संगीत निर्देशन में इस फिल्म के कुछ गीत प्रो० विनायक राव पटवर्धन की आवाज में हैं.¹¹ जिसमें 'सरिता सुगन्ध शोभे बसंत'¹² (राग बसंत), प्रमुख बानी तू कमला मोहे काहे शरमाए¹³ (राग किरवाणी), अहंकार करके हमेशा¹⁴ (राग मालकौंस) द्रुत ख्याल रूपी गीत उत्कृष्ट शास्त्रीय गायक पं० विनायकराव पटवर्धन द्वारा गाये गये हैं. इस चित्रपट में उन्होंने बतौर अभिनेता भूमिका भी निभाई है. इसके अतिरिक्त 'कैसे देखूँ माधुरी' विशुद्ध द्रुत ख्याल की बंदिश भी इसमें उन्हीं द्वारा गाई गई है.¹⁵

1952 में बनी फिल्म बैजू बावरा में विलम्बित एवं कुछ द्रुत ख्याल की रचनाओं का प्रयोग किया गया. जिन्हें संगीत निर्देशक श्री नौशाद अली ने उत्कृष्ट शास्त्रीय गायकों से इस चित्रपट में गवाया. इनमें 'तोरी जय-जय करतार'¹⁶ राग पूरिया धनाश्री में द्रुत ख्याल की बंदिश एक ताल में प्रस्तुत की तथा राग देसी में, एक ताल में निबद्ध विलम्बित ख्याल, 'तुम्हरे गुण गाऊँ' और तीन ताल में द्रुत ख्याल 'आज गावत मन मेरो झूम के'¹⁷ पण्डित डी.वी. पलुस्कर के साथ 30 अमीर खाँ ने जुगलबन्दी में गाए. इसके अतिरिक्त इसी चित्रपट में राग मालकौंस में ख्याल अंग से एक बहुत मधुर भजन 'मन तरपत हरि दर्शन को आज'¹⁸ को मुहम्मद रफी से भावमयी और सोजपूर्ण आवाज़ में गवाया गया. जो कि वर्तमान समय में भी संगीत रसिकों के हृदय को आनन्द प्रदान कर रहा है. इसी वर्ष 'राग रंग' चित्रपट में राग यमन में सुप्रसिद्ध द्रुत ख्याल 'ऐरी आली पिया बिन'¹⁹ को लता मंगेशकर ने मधुर सरगमों एवं तानों के साथ प्रस्तुत किया. 'मल्हार' (1951) चित्रपट में 'गरजत बरसत भीजत आइलो'²⁰ गौढ़ मल्हार राग में निबद्ध द्रुत ख्याल की बंदिश को संगीत निर्देशक रोशन ने सुर साम्राज्ञी लता मंगेशकर से फिल्म के प्रारंभ में गवाया. इसी बंदिश की धुन व शब्द में कुछ फेरबदल करके 'गरजत बरसत भीजत आइलो'²¹ द्रुत ख्याल की बंदिश को इसी राग में रचकर संगीत निर्देशक एस.एन. त्रिपाठी ने इसको सुमन कल्याणपुरी एवं कमल बरोत से युगल स्वर में चित्रपट 'बरसात की एक रात' में गवाया. स्थायी के मुखड़े के बोल लगभग समान हैं, शेष पद रचना भिन्न है परन्तु स्थायी अन्तरे की धुन लगभग समान रखी है. यह गीत संभवतः राग छायाणट पर आधारित है. यदा-कदा राग कामोद का चलन भी झलकता है. इसमें बोल, आलाप और तानों से सौन्दर्य में वृद्धि हुई है.

लता मंगेशकर ने ही 1955 में 'सीमा' चित्रपट में राग जयजयवंती में मधुर द्रुत ख्याल 'मन मोहना बड़े झूठे'²² गाया जिसमें खूबसूरत आलाप और तानों का प्रयोग कर अपने मधुर कण्ठ से उसे अलंकृत किया.

1956 में आई फिल्म 'बसंत-बहार' में संगीतकार शंकर-जयकिशन ने अविस्मरणीय संगीत दिया. इसका सर्वप्रसिद्ध गीत 'केतकी गुलाब जूही'²³ बसंत में रचित द्रुत ख्याल है जिसको शास्त्रीय संगीत के प्रख्यात गायक पं० भीमसेन जोशी के साथ पार्श्व गायक मन्ना डे ने बड़ी तैयारी से अत्यन्त सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया. इस गीत की शास्त्रीयता गायकों के नाम जानने पर ही प्रमाणित हो जाती है. बसंत और बसंत बहार रागों के आधार पर निर्मित की गई यह एक परम्परागत शास्त्रीय ढंग की बंदिश है.²⁴ इसके अतिरिक्त इसी चित्रपट में 'अनोखा लाडला' राग दरबारी कान्हड़ा में मन्ना डे ने तथा 'फूलन के हरवा' को राग पूरिया में मुहम्मद रफी ने केवल आलाप रूप में अल्प समय के लिए गाया.

चित्रपट 'झनक-झनक पायल बाजे (1955)' शास्त्रीय गीत संगीत एवं नृत्य पर आधारित हैं इसमें इसका शीर्षक गीत 'झनक झनक पायल बाजे' को अड़ाना में 30 अमीर खाँ ने गाया. इसमें 'आई रुत सावन की' रागमालिका को लता व मन्ना डे ने समधुर आवाज़ों में गाया.²⁵ शास्त्रीय संगीत के साथ नृत्य का सुन्दर संगम इस चित्रपट में देखने को मिलता है. इसके संगीत निर्देशक श्री बसन्त देसाई है.

1957 में चित्रपट 'रानी रूपमती' में राग दरबारी कान्हड़ा में एकताल में निबद्ध द्रुत ख्याल 'उड़ जा भंवरे' को मन्ना डे तथा 'आजा भँवर' को तीन ताल में लता मंगेशकर ने गाया.²⁶ इसी वर्ष चित्रपट 'देख कबीरा रोया' में राग जयजयवन्ती में रचित द्रुत ख्याल 'बैरन हो गई रैन' को मन्ना डे ने गाया.²⁷

1960 में 'मुगले आजम' चित्रपट में उ० बड़े गुलाम अली खाँ द्वारा रागेश्वरी में गाये मधुर द्रुत ख्याल 'शुभ दिन आयो राज दुलारे'²⁸ का प्रयोग नौशाद साहिब ने कुछ क्षण के लिए किया. 1961 में चित्रपट 'छाया' में सलिल चौधरी के संगीत निर्देशन में लता मंगेशकर ने राग बहार में 'छम-छम नाचत आई बहार' गीत गाया.²⁹

1963 में 'तेरी सूरत मेरी आँखे' चित्रपट में ख्याल अंग में 'पूछो न कैसे मैंने रैन बिताई'³⁰ गीत राग अहीर भैरव में रचा गया है. इस राग के पूर्वांग में भैरव तथा उत्तरांग में काफी राग मिश्रित होता है अतः इस गीत में भी राग के इस चलन का ध्यान रखा गया है. ताल पंजाबी ठेका झोल देकर बजाया गया है जिसके कारण गीत में गंभीरता का आभास होता है. सारंगी का प्रयोग इसमें मनमोहक लगता है. मन्ना डे ने इस गीत को गाकर संगीत रसिकों के हृदय में विशेष स्थान प्राप्त किया है. इस गीत की धुन बेहद हृदयस्पर्शी है.

1964 में चित्रपट 'चित्रलेखा' में राग कलावती में 'ऐरी जाने ना दूंगी'³¹ लता मंगेशकर द्वारा गाया लोकप्रिय गीत ख्याल अंग का ही है. चित्रपट 'दिल की राहें' में 'हरि गुण गावे व्याकुल मनवा'³² तथा 'भोर आई मदमाती' भी ख्याल अंग की बंदिश है, चित्रपट 'बावर्ची' में राग अल्हैया बिलावल में 'भोर आई गया अन्धियारा'³³, चित्रपट 'आलाप' में राग भैरवी में 'माँ सरस्वती शारदे'³⁴ इत्यादि गीत ख्याल अंग से रचे गये जिनको जनसाधारण से काफी स्नेह प्राप्त हुआ.

80 के दशक में भी कुछ चित्रपटों में द्रुत ख्यालों का प्रत्यक्ष प्रयोग किया गया तो कहीं ख्याल शैली में गीतों की रचना की गई. 'चश्मे बहूर' चित्रपट में हेमंती शुक्ला तथा येशुदास से दो गीत ख्याल शैली में गवाए गए. पहला राग मेघ में रचित 'कहाँ से आये बदरा'³⁵ बहुप्रचलित गीत है तथा दूसरा काफी राग में 'काली घोड़ी द्वार खड़ी'³⁶ गीत है. चित्रपट 'विजेता' (1982) में आशा भोंसले और सत्यशील देशपांडे ने राग अहीर भैरव में 'मन आनंद आनंद छायो'³⁷ श्रुतिप्रिय द्रुत ख्याल गाया.

1990 में चित्रपट 'लेकिन' में भी शास्त्रीय संगीत का विशेष प्रयोग किया गया जिसमें हृदयनाथ मंगेशकर तथा लता मंगेशकर ने राग गुजरी तोड़ी में द्रुत ख्याल 'जा जा रे जा पथिकवा' गाया तथा आशा भोंसले ने ख्याल शैली का गीत राग बिलासखानी तोड़ी में 'झूठे नैना बोले सांची बतिया'³⁸ को बखूबी निभाया है. गीत में राग के स्वरूप को सफलतापूर्वक बनाये रखा गया. गीत का उठान चलत तान में लेकर आशा भोंसले ने संगीत रसिकों का ही नहीं शास्त्रीय संगीतकारों का भी मन मोह लिया.

1999 में 'हम दिल दे चुके सनम' फिल्म में वर्तमान समय के सफल संगीत निर्देशक इस्माइल दरबार ने राग अहीर भैरव की बहुप्रसिद्ध द्रुत ख्याल की बंदिश 'अलबेला सजन आयो री'³⁹ का प्रयोग बड़ी सुंदरता से किया. द्रुत ख्याल की इस बंदिश को पाश्चात्य संगीत के साथ मिश्रित कर इसे शास्त्रीय गायक उ० सुल्तान खाँ, पार्श्व गायिका कविता कृष्णमूर्ति एवं पार्श्व गायक शंकर महादेवन से गवाया गया जो कि जनसाधारण में बेहद लोकप्रिय हुआ. इस गीत द्वारा साधारण संगीत रसिक भी सहजतापूर्वक शास्त्रीय संगीत से जुड़ गये. इसके अतिरिक्त पटियाला घराना के संस्थापक उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ द्वारा गाया राग गुर्जरी तोड़ी में प्रसिद्ध द्रुत ख्याल 'भोर भई तोरी राह तकत पिया'⁴⁰ का प्रयोग चित्रपट 'दिल्ली-6' में किया गया. वर्तमान समय की युवा गायिका श्रेया घोषाल की आवाज़ में इसी बंदिश को गवाकर उसमें उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ की रिकॉर्डिंग को आधुनिक तकनीक से मिलाकर नवीन ढंग से प्रस्तुत किया गया. श्रेया घोषाल जो शास्त्रीय संगीत में भी काफी निपुण है, ने इस गीत को बड़े सुन्दर ढंग से सफलतापूर्वक गाया. इसके अतिरिक्त इसी गायिका ने वर्तमान समय का लोकप्रिय गीत 'मेरे ढोलना सुन' राग गारा में द्रुत ख्याल शैली में गाकर सबका मन मोह लिया. 2005 में चित्रपट 'किसना' में उ० राशिद अली का गाया राग किरवाणी में एक ताल में निबद्ध द्रुत ख्याल 'तोरे बिन मोहे चैन नहीं'⁴¹ भी बहुत मधुर ख्याल है. चित्रपट 'यात्रा' (2007) में इन्होंने ही राग मेघ में झपताल में पहले विलम्बित ख्याल फिर तीनताल में द्रुत ख्याल का गायन किया. बंदिश के बोल थे 'गरजे घटा (विलम्बित ख्याल)' तथा 'गगन गरज चमकत दामिनी (द्रुत ख्याल)'. 2008 में 'ब्लैक एंड व्हाइट' चित्रपट में सुखविंदर सिंह के संगीत निर्देशन में उन्हीं की तथा साधना सरगम की आवाज़ में गाया राग दरबारी कान्हड़ा में ख्याल अंग से 'जोगी आया रे'⁴² गीत भी कर्णप्रिय प्रतीत होता है.

चित्रपट 'युवराज' (2008) में ए.आर. रहमान ने राग भीमपलासी में द्रुत ख्याल की सुप्रसिद्ध बंदिश 'लट उलझी सुलझा जा'⁴³ का पाश्चात्यकरण करके गाया. चित्रपट 'मॉर्निंग वॉक' (2009) में उ० राशिद अली ने श्रेया घोषाल एवं जोई बरुआ के साथ ख्याल अंग का गीत 'भोर भए'⁴⁴ को राग ललित एवं पूरिया धनाश्री में गाया.

वर्तमान समय में इंटरनेट पर वेब सीरिज़ का बहुत प्रचलन है. हाल ही में (2020) 'बंदिश बैडिट्स' नामक शास्त्रीय संगीत पर आधारित वेब सीरिज़ में ख्याल गायन शैली एवं उसकी बंदिशों का सफल प्रयोग किया गया है. इसमें पटियाला घराने के प्रतिष्ठित गायक पं० अजय चक्रवर्ती जी ने राग मल्हार में द्रुत ख्याल 'गरज-गरज आज मेघ'⁴⁵ का गायन कर संगीत-रसिकों को आनंद विभोर किया है. इसी बंदिश को बाद में बड़े सुंदर एवं आकर्षक ढंग से जुगलबंदी के रूप में भी प्रस्तुत किया गया है. इसी श्रृंखला में श्रीया सौंदर ने शंकर महादेवन के संगीत निर्देशन में राग बिहाग में द्रुत ख्याल की परंपरागत बंदिश 'लट उलझी सुलझा जा'⁴⁶ का गायन बड़ी खूबसूरती से किया है. इसी में राग भैरव में द्रुत ख्याल की प्राचीन एवं परंपरागत बंदिश 'जागो मोहन प्यारे'⁴⁷ का गायन सामूहिक रूप से पुरुष गायकों से करवाया गया है. इसका प्रयोग वेब सीरिज़ में शुरुआत में ही किया गया .

इस प्रकार से चित्रपट संगीत में शास्त्रीय गायन विधा ख्याल का प्रयोग प्रारम्भ से लेकर वर्तमान समय तक चित्रपट संगीतकारों द्वारा समय-समय पर किया जाता रहा है. जिसे जनसाधारण ने अत्यन्त सराहा है. फिल्म संगीत निर्देशकों का उद्देश्य सदैव जनरुचि के अनुकूल संगीत निर्माण करना रहा है, चित्रपट के शुरूआती दौर में लोगों की शास्त्रीय संगीत के प्रति रुचि को ध्यान में रखते हुए उन्होंने ऐसे गीतों का सृजन किया, जिनका आधार पूर्णतः शास्त्रीय संगीत था.⁴⁸ फिल्म संगीत में शास्त्रीयता केवल वहीं तक मिलती हैं, जहाँ तक वह जनता जनार्दन के चित्त को अनुरंजित कर सकने में समर्थ है.⁴⁹ सम्भवतः यही कारण था कि शास्त्रीय संगीत की विधाओं से अलंकृत इन गीतों को जनसाधारण से शुद्ध शास्त्रीय संगीत की अपेक्षाकृत अधिक स्नेह प्राप्त हुआ. इसके अतिरिक्त एक कारण यह भी हो सकता है कि इन गीतों के निर्माण में सैकड़ों कलाकारों का योगदान रहता है तथा इन गीतों के लिए विभिन्न वाद्यों का प्रयोग किया जाता है. मात्र तीन-चार मिनट में ये गीत संगीत रसिकों को संपूर्ण रस का आस्वादन कराने में सफल हो जाते हैं.

चित्रपट में संगीत की भूमिका दरअसल बहुत पहले बोलती फिल्म की रिलीज के साथ ही तय हो चुकी थी. विडंबना यह है कि 'आलम-आरा' सहित इस शुरूआती दौर की अनेक फिल्मों के रिकार्ड ही नहीं बने. 1931 से 1934 तक के वर्षों में फिल्म संगीत के मात्र 44 ग्रामोफोन रिकार्ड ही जारी हुए. इन पर 76 गीत अंकित थे.⁵⁰ कारणवश उस समय के प्रचलित गीतों के बारे में कोई विशेष जानकारी प्राप्त नहीं होती.

आज तक चित्रपटों में शास्त्रीय संगीत को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है यहाँ तक कि इसे चित्रपटीय शास्त्रीय संगीत की संज्ञा प्रदान की गई है क्योंकि प्रायः जितने भी शास्त्रीय संगीत प्रधान चित्रपट बने उन्हें खूब सराहना मिली और उन चित्रपटों को आधार प्रदान करने में शास्त्रीय संगीत की महत्वपूर्ण भूमिका रही है.⁵¹

उपसंहार

फिल्म संगीत सर्वसुलभ है. चित्रपट में शास्त्रीय गायन विधाओं का प्रयोग फिल्म संगीत एवं शास्त्रीय संगीत दोनों के लिये ही हितकारी सिद्ध हुआ है, क्योंकि जहाँ एक ओर चित्रपट संगीत में नवीनता हेतु शास्त्रीय संगीत का प्रयोग कर उसे पाश्चात्य संगीत के अनावश्यक प्रभाव से भी बचाया जा सका है, वहीं जनसाधारण को शास्त्रीय संगीत का प्रचलन करने एवं लोक रुचि जागृत करने में फिल्म संगीत के योगदान को अनदेखा नहीं किया जा सकता. ध्रुपद, ख्याल, ठुमरी, टप्पा इत्यादि फिल्मी दायरे में आकर ऐसे सज उठे कि जनसाधारण झूम उठा.

कई फिल्म गीत शास्त्रीय संगीत की विविध गायन शैलियों और रचनाओं का आधार पाकर अत्यन्त जनप्रिय हुए हैं. यही नहीं शास्त्रीय संगीत के कलाकारों-पं० भीमसेन जोशी, उ० अमीर खाँ, उ० बड़े गुलाम अली खाँ, किशोरी अमोणकर, उ० गुलाम मुस्तफा खाँ, डी०वी० पुलस्कर, पं० रवि शंकर, अली अकबर खाँ, उ० राशिद खाँ, बेगम परवीन सुल्ताना, पं० अजय चक्रवर्ती इत्यादि शास्त्रीय गायकों ने भी फिल्म संगीत में अपने गायन द्वारा इसे सशक्तता प्रदान की है. हमारा शास्त्रीय संगीत भारतीय संगीत की विरासत है जो हमें अपने पूर्वजों से पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्राप्त हुई है, दीर्घकाल से यह चलती आ रही है तथा भविष्य में भी यह दीर्घकाल तक चलती रहेगी. चित्रपटों में जितना भी संगीत शास्त्रीय संगीत

के आधार पर निर्मित हुआ, उनकी तरो-ताज़गी आज भी कायम है. इस प्रकार से जहां एक ओर चित्रपट संगीत के गिरते हुए स्तर को ऊपर उठाया जा सकता है, वहीं शास्त्रीय संगीत की विधाओं के प्रचलन में चित्रपट संगीत एक सशक्त माध्यम के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है.

संदर्भ:-

¹ विमल. *हिन्दी चित्रपट एवं संगीत का इतिहास*, संजय प्रकाशन, प्रथम संस्करण (2010) पृ० 58

² गर्ग, लक्ष्मी नारायण. संगीत विशारद. *संगीत कार्यालय हाथरस* (उत्तर प्रदेश) अक्टूबर (2017) पृ० 723

³ जौहरी, सीमा सांगीतिक निबन्ध माला, पीयूष प्रकाशन, प्रथम संस्करण (2001), पृ० 61

⁴ <https://youtu.be/G04LrEYepSQ>

⁵ <https://youtu.be/nncyyp8eOl0>

⁶ <https://youtu.be/-sWo9fkWdRY>

⁷ https://youtu.be/CWm_IYrOsxA

⁸ <https://youtu.be/N3NwQlXcMH0>

⁹ <https://youtu.be/DFrnM-VTDCU>

¹⁰ https://youtu.be/khB_n8iOs0M

¹¹ केसवानी, राजकुमार. *हिन्दुस्तानी सिनेमा: संगीत का सफर* (मार्च 2003), कथाचित्र पृ०- 164-166

¹² <https://youtu.be/ekRjdX4IucE>

¹³ https://youtu.be/kmoFH_TQVY0

¹⁴ https://youtu.be/nf9_2SIJw_I

¹⁵ <https://youtu.be/c4JidkT-2Ck>

¹⁶ <https://youtu.be/HcXJxsJQwNQ>

¹⁷ <https://youtu.be/NjvX5Cecw6Q>

¹⁸ <https://youtu.be/tz7C0MEaMfQ>

¹⁹ https://youtu.be/grI1GjqU_-I

²⁰ <https://youtu.be/rfBCqtqmXPg>

²¹ <https://youtu.be/7TnuhH3Ij-I>

²² https://youtu.be/uXGMxTTB_Dg

²³ <https://youtu.be/FseICrhx-W0>

²⁴ धवन देवकीनंदन, फिल्मी शास्त्रीय गीत अंक भाग-1, *संगीत पत्रिका* (1973), संगीत कार्यालय, हाथरस (उ. प्र.) पृ० 43

-
- ²⁵ <https://youtu.be/D3TN-JnyuHQ>
- ²⁶ <https://youtu.be/woNxEX0Ht00>
- ²⁷ <https://youtu.be/MGTlCMEbP7s>
- ²⁸ <https://youtu.be/8CmDI9e3JhA>
- ²⁹ <https://youtu.be/zy1CY33li-Q>
- ³⁰ <https://youtu.be/F0OesJKRsJ4>
- ³¹ <https://youtu.be/YAC8web3tHw>
- ³² <https://youtu.be/Bp0nfGqBn1s>
- ³³ <https://youtu.be/ysn3L2sPTkM>
- ³⁴ <https://youtu.be/Hb51Kunk-bg>
- ³⁵ <https://youtu.be/xIZKmLkjin1s>
- ³⁶ <https://youtu.be/4Vi91ao-S8g>
- ³⁷ https://youtu.be/kPc_dyJbs1U
- ³⁸ <https://youtu.be/NmLnPzgY1n8>
- ³⁹ <https://youtu.be/MCXQXukPgKE>
- ⁴⁰ <https://youtu.be/gM2NkPOOd84>
- ⁴¹ <https://youtu.be/CcJHNIsmPQ8>
- ⁴² https://youtu.be/DnCCQY2_p0I
- ⁴³ <https://youtu.be/Yd5JSoV8CtQ>
- ⁴⁴ <https://youtu.be/UrVJIxIWa58>
- ⁴⁵ <https://youtu.be/tjLRCTYNMBs>
- ⁴⁶ <https://youtu.be/mb2-sbQhoN4>
- ⁴⁷ <https://youtu.be/CuVNxVmt1xs>

⁴⁸ जौहरी, सीमा. सांगीतिक निबन्ध माला, पीयूष प्रकाशन, प्रथम संस्करण (2001), पृ. 61

⁴⁹ गर्ग, मुकेश. फिल्मी शास्त्रीय गीत अंक भाग-1, संगीत मासिक पत्रिका (1973), संगीत कार्यालय हाथरस (उ. प्र.) पृ. 81

⁵⁰ केसवानी, राजकुमार. हिन्दुस्तानी सिनेमा: संगीत का सफर (मार्च 2003), कथाचित्र पृ. 164-166

⁵¹ विमल, हिन्दी चित्रपट एवं संगीत का इतिहास, संजय प्रकाशन, प्रथम संस्करण (2010) पृ. 155